Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

MAL

मलाकी 1:1–5, मलाकी 1:6–3:15, मलाकी 3:16–4:3, मलाकी 4:4–6

मलाकी 1:1–5

मलाकी ने अपने संदेशों को प्रश्न और उत्तर के माध्यम से साझा किया है। परमेश्वर ने उनके लोगों (परमेश्वर के लोग) से जो यहूदा देश में रहते थे, प्रश्न पूछे। लोगों ने परमेश्वर के प्रश्नों का उत्तर दिया। उन्होंने भी उनसे प्रश्न पूछे।

ये वे लोग थे जो परमेश्वर के न्याय के बाद जीवित बचे थे। जब बाबेल के शासन ने दक्षिणी राज्य पर नियंत्रण कर लिया तब न्याय हुआ। इस समूह में वे लोग शामिल थे जिनके परिवारों को दक्षिणी राज्य छोड़ने के लिए मजबूर नहीं किया गया था। इस समूह में वे यहूदी भी शामिल थे जो बाबेल से यहूदा लौट आए थे।

फारस के शासन ने उन्हें लौटने और मंदिर का पुनर्निर्माण करने की अनुमति दी थी। पहले प्रश्न और उत्तर का समूह परमेश्वर के प्रेम के विषय में था। परमेश्वर ने अब्राहम के प्रति अपना प्रेम दिखाने का चयन किया। उन्होंने यह अब्राहम के साथ एक वाचा करके और उनके परिवार की वंशावली द्वारा दिखाया। परमेश्वर ने याकूब की वंशावली के माध्यम से अब्राहम के साथ अपनी वाचा को जारी रखने का चयन किया। यह एक तरीका है जिससे उन्होंने इस्राएल के लोगों के प्रति अपना प्रेम दिखाया।

परमेश्वर के प्रेम के विषय में लोगों के प्रश्न कुछ दिखाते थे। वह दिखाते थे कि वे परमेश्वर के चयन और उनके वचनों के बारे में क्या अनुभव करते थे। उन्हें यह नहीं लगता था कि ये बातें महत्वपूर्ण थीं। उन्हें नहीं लगता था कि ये बातें उनके जीवन में सहायता करती थीं। बाद में मलाकी के संदेशों में पूछे गए सवालों से भी यह बात पता चली थी।

मलाकी 1:6–3:15

परमेश्वर ने अपने प्रश्नों और उत्तरों में अपने लोगों पर कई बातों का आरोप लगाया। उन्होंने उन पर आरोप लगाया कि वे उनका सम्मान नहीं कर रहे हैं या उनकी इज्जत नहीं कर रहे हैं। उन्होंने यह दिखाया कि वे उस तरीके से नहीं जी रहे थे जैसा परमेश्वर ने उन्हें सिखाया था। परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था में जीवन जीने के अपने तरीके बताए थे। लोगों ने परमेश्वर के तरीकों का पालन करने का वादा किया था। उन्होंने यह वादा सीनै पर्वत की वाचा में किया था।

उस वाचा में कई व्यवस्था इस बारे में थीं कि परमेश्वर की आराधना कैसे करनी चाहिए। वे इस बारे में भी थीं कि दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना है। लेकिन लोगों ने बलिदान चढ़ाए जो उन्हें नहीं चढ़ाने थे। उन्होंने परमेश्वर को अपनी हर वस्तु का दसवाँ अंश वापस नहीं चढ़ाया। कई पुरुषों नें उन स्त्रियों से विवाह किए थे जो झूठे देवताओं की उपासना करती थीं। कई पुरुषों ने अपनी पत्नियों को तलाक दे दिया। लोगों ने जरूरतमंद लोगों के साथ बुरा व्यवहार किया। याजकों ने लोगों को जीवन जीने के वे तरीके नहीं सिखाए जो परमेश्वर द्वारा दिए गए थे।

एज्रा और नहेम्याह में दर्ज कहानियाँ दिखाती हैं कि लोग इन कार्यों को कर रहे थे। ये चीजें उन कार्यों के विपरीत थीं जो परमेश्वर अपने लोगों से चाहते थे। लोगों के प्रश्न और उत्तर यह दिखाते थे कि वे यह नहीं समझते थे कि परमेश्वर कौन हैं या वह क्या चाहते हैं। परमेश्वर ने समझाया कि वह उनके पिता, उनके स्वामी और उनके सृष्टिकर्ता हैं। लोग उन्हीं के थे। उन्हें एक-दूसरे के प्रति वैसे ही विश्वासयोग्य होना था जैसे कि वह उनके प्रति विश्वासयोग्य थे।

परमेश्वर वही करते है जो सही और न्यायपूर्ण है और वे उन पर न्याय लाते हैं जो बुराई करते हैं। परमेश्वर सब पर शासन करने वाले प्रभु हैं। वे लोगों की सभी आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं। परमेश्वर अपने लोगों को इतनी आशीष देने की इच्छा रखते थे कि वे उसे संचित नहीं कर सकते थे। परमेश्वर ऐसा तब करते यदि उनके लोग सीनै पर्वत की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहते। इसका यह अर्थ नहीं है कि परमेश्वर के लोगों का परमेश्वर की आशीषों पर नियंत्रण था। इसका यह भी अर्थ नहीं है कि वे परमेश्वर या मंदिर को धन देने के कारण आशीषित होंगे। इस प्रकार की सोच को समृद्धि सुसमाचार कहा जाता है और यह सत्य नहीं है।

सच्चाई यह थी कि परमेश्वर के लोगों को सीनै पर्वत की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहना आवश्यक था। इससे वाचा की आशीषें परमेश्वर के लोगों तक पहुँच सकती थी। लेकिन परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर के बारे में इन बातों पर विश्वास नहीं किया। उन्होंने उन पर भरोसा नहीं किया कि वे उन्हें भोजन और पेय प्रदान करेंगे जिसकी उन लोगों को

आवश्यकता थी। उन्होंने इस पर विश्वास नहीं किया कि वे बुराई करने वालों को दंडित करते हैं। उन्होंने परमेश्वर के न्यायी होने पर सवाल उठाए। ये सवाल भजन संहिता 73 में पूछे गए सवालों के समान थे और अय्यूब द्वारा पूछे गए सवालों के समान थे। लोगों को यह विश्वास नहीं था कि परमेश्वर उन्हें आशीष देना चाहते थे। उन्होंने विश्वास नहीं किया कि परमेश्वर की आज्ञा का विश्वासपूर्वक पालन करना उनकी इच्छाओं को पूरा करने से बेहतर था।

उन्हें ऐसा लगा कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना कठिन कार्य था। यह कठिन था और इसका परिणाम उनके लिए कुछ भी अच्छा नहीं लाया। सैकड़ों वर्षों तक परमेश्वर के लोगों ने उन पर विश्वास करने और उन पर भरोसा करने से इनकार कर दिया था। मलाकी के समय में यहूदी लोग परमेश्वर के न्याय के समय से गुज़रे थे। लेकिन उनमें से ज़्यादातर लोग परमेश्वर के प्रति उतने विश्वासयोग्य नहीं थे जितने उनके बहुत पहले के लोग थे। परमेश्वर इस बात से बहुत दुखित थे।

मलाकी 3:16–4:3

मलाकी भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर का संदेश बांटा जो प्रभु के दिन के बारे में था। यह पापी लोगों के खिलाफ न्याय का संदेश था। ये वे लोग हैं जो पाप की सामर्थ को अपने ऊपर हावी होने देते हैं। वे बुरे काम करने का चुनाव करते हैं और पाप करना बंद करने से इनकार करते हैं।

परमेश्वर का क्रोध एक जलती हुई भट्ठी की तरह बताया गया था। यह घमंडी और पापी लोगों को जला देगा। इसी तरह परमेश्वर ने उस कार्य का वर्णन किया जो वे करने जा रहे थे। वह बुराई को और बुरे काम करने वाले सभी लोगों को पूरी तरह से रोकने के लिए कार्रवाई करेगें।

यह उन लोगों के लिए आशा का संदेश था जो परमेश्वर का सम्मान करते थे। जब परमेश्वर बुराई के खिलाफ न्याय लाएँगे तब ये लोग आनंद से भर जाएंगे। ऐसा इसलिए क्योंकि इससे उन्हें परमेश्वर द्वारा चंगा होने का अवसर मिलेगा। उन्हें उन सभी हानियों से चंगा होने की आवश्यकता थी जो पाप और बुराई के कारण होती हैं। तब वे परमेश्वर के साथ जीवन का पूर्ण आनंद ले सकेंगे।

परमेश्वर न्यायाधीश हैं। केवल वही जानते हैं कि कौन उन्हें पूरे हृदय से सम्मान और आदर करता है। जो लोग परमेश्वर का सम्मान और आदर करते थे, उन्हें उनकी विशेष संपत्ति कहा जाता था। इससे यह पता चलता है कि जब लोग उनसे प्रेम करते हैं, तो परमेश्वर को कितनी प्रसन्नता होती है।

मलाकी 4:4–6

परमेश्वर अपने लोगों से यह चाहते थे कि वे उन पर विश्वास करें और उनकी आज्ञा का पालन करें। वे चाहते थे कि मनुष्य उनके साथ शांति में जीवन व्यतीत करें।

इसीलिए परमेश्वर ने अपने लोगों को मूसा की शिक्षाओं का स्मरण कराया। यह परमेश्वर के लोगों की सभी कहानियों और व्यवस्थाओं के विषय में बात करने का एक तरीका था। ये कहानियाँ और नियम पवित्रशास्त्र का हिस्सा थे। पवित्रशास्त्र परमेश्वर का वचन है और परमेश्वर के लोगों द्वारा इसका अध्ययन किया जाता है।

यह कहानियां और व्यवस्था पुराने नियम में दर्ज की गयी थी। मूसा की व्यवस्था परमेश्वर के लोगों को यह दिखाती थी कि वे परमेश्वर से कैसे प्रेम करें, उनका सम्मान और उनका आदर करें। यह उन्हें दिखाता था कि दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार कैसे करें। यह उन्हें शांति से जीना सिखाता था। इसमें परमेश्वर के साथ, उनके परिवारों के साथ और एक राष्ट्र के रूप में शांति शामिल थी।

परमेश्वर ने वादा किया कि वे प्रभु के दिन के आने से पहले भविष्यद्वक्ता एलिय्याह को भेजेंगे। यह उन सभी संदेशों के बारे में बात करने का एक तरीका था जो परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बोले थे। उन्होंने सैकड़ों वर्षों तक अपने लोगों को ये संदेश दिए थे। ये संदेश भी उन पवित्रशास्त्रों का हिस्सा थे जिनका अध्ययन परमेश्वर के लोग करते थे। भविष्यद्वक्ताओं के लेखन ने परमेश्वर के लोगों को वही बातें सिखाईं जो मूसा की व्यवस्था ने सिखाईं थी।

भविष्यद्वक्ता एलिय्याह के बारे में बात करना भी एक निश्चित संदेशवाहक के बारे में बात करने का एक तरीका था। परमेश्वर ने इस संदेशवाहक के बारे में मलाकी 3:1 में बात की थी। यह संदेशवाहक परमेश्वर के लिए मार्ग तैयार करेगा। यह संदेशवाहक यह कार्य तब करेगा जब परमेश्वर अपने लोगों का न्याय करने आएंगे।

कई वर्षों बाद मलाकी का यह संदेश यीशु के अनुयायियों के लिए सहायक सिद्ध हुए। इन संदेशों ने उन्हें यीशु के जीवन और कार्य को समझने में सहायता की। यीशु ने एलिय्याह के बारे में मलाकी की भविष्यद्वाणी की व्याख्या की। उन्होंने समझाया कि यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बारे में एक भविष्यद्वाणी थी। इससे यीशु के अनुयायियों को यीशु के बारे में कुछ समझने में मदद मिली। वह वही प्रभु हैं जिनके लिए संदेशवाहक ने लोगों को तैयार किया था। यीशु ही वह प्रभु हैं जिनकी वह सब लम्बे समय से प्रतीक्षा कर रहे थे।